जल : जीवन का आधार

समीक्षक : **डॉ. पंकजा सोनवलकर**

लेखक : **डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 106

मूल्य : रु. 165/-

'जल : जीवन का आधार' बहुत ही साधारण-सी दिखाई देने वाली पुस्तक है, किंतु यह साधारण-सी कृति अपनी सरल, स्पष्ट एवं सहज भाषा-शैली द्वारा पानी जैसे आम विषय के विभिन्न आयामों को अद्‌भुत विस्तार देकर असाधारण हो गई है। 12 अध्यायों को समेटे यह पुस्तक पानी की अतिविशिष्ट विशेषताओं का बखूबी रोचक और ज्ञानवर्धक विवरण प्रस्तुत करती है।

पुस्तक की विषयवस्तु मन में कौंधने वाले कई प्रश्नों के समाधान बहुत सुगमता से देती है। सृष्टि का महत्वपूर्ण नियामक जल है और जल एक प्राकृतिक शक्ति है, इस तथ्य को लेखक ने 'हाइड्रोजन बंध यानी पर्दे के पीछे के कारीगर' शीर्षक द्वारा बहुत रोचक प्रकार से लिखा है।

क्या पानी सचमुच रंगहीन है?, पॉली वाटर : सच्चाई या शगूफा?, बर्फ एक खनिज भी है, नवजात शिशु की पहली साँस यानी हाइड्रोजन बंधों के खिलाफ जद्‌दोजहद जैसे विषय बहुत ही आकर्षित करते हैं।

सबसे जाना-पहचाना सबसे आम द्रव्य पानी के गुणों को 'लचीले बंध बनाम लचीले कायदे-कानून' और 'मेंडलीव महोदय! हमें आपके आवर्ती नियम-कायदों की परवाह नहीं है', जैसे जिज्ञासा बढ़ाने वाले शीर्षक पुस्तक की विषयवस्तु को अप्रतिम स्वरूप देते हैं।

पुस्तक पानी के आश्चर्यजनक भौतिक, रासायनिक और जैवरासायनिक गुणों को (आवश्यकतानुसार बहुत ही खूबसूरती से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का अनुप्रयोग करते हुए भी) अत्यंत सरल शब्दों में समझ विकसित करती है।

यह पुस्तक पौधों में जड़ से शिखर तक की पानी की यात्रा, जल के विलयन के रसायन जैसे अनेक अनछुए पहलुओं को बहुत साधारण भाषा-शैली में प्रस्तुत करती है।

पानी, इसके रूपों की विविध ज्यामितीय संरचनाएँ, इनसे जुड़े जैवविविधतापूर्ण रहस्यों को आमजन को समझाना लेखक की अप्रतिम विशेषता का परिचायक है। अद्‌भुत लेखन विशेषता के माध्यम से लेखक पाठकों को पानी के आश्चर्यजनक गुणों की ज्ञान सरिता में बहा ले गए हैं और पूर्ण ब्रह्मांड की सैर करवाई है तथा लेखक ने बहरूपिया पानी के विविधतापूर्ण गुण, शक्तियों के वैज्ञानिक संप्रत्ययों को बहुत आसानी से अवबोध स्तर तक स्थापित कर पाठकों में निश्चित ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का भरपूर प्रयास किया है।

पुस्तक में पाठकों की मानसिक आवश्यकतानुसार चित्र देकर विषयवस्तु और इसकी संकल्पना को सार्थक विस्तार दिया गया है। विज्ञान के तथ्यों एवं तर्कों को लेखक ने विशुद्ध और सरल हिंदी भाषा द्वारा बहुत ही रोचक बनाया है। हिंदी में लिखी होने के कारण इस पुस्तक के तमाम पाठक हिंदी भाषी हैं और होंगे।

यह पुस्तक पाठकों को विज्ञान विषय के गूढ़ संदर्भों को आसानी से समझने के अवसर देती है। वस्तुतः पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

मिश्री मौसी का मटका

समीक्षक : **हरिसुमन बिष्ट**

लेखक : **सुधा भार्गव**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 76

मूल्य : रु. 65/-

पहले कहानी लिखने की शुरुआत हुई या फिर कविता की; इस पर हम चर्चा नहीं करेंगे। इतना जरूर कहेंगे यदि कविता का उद्‌भव पहले हुआ तो संभवतः उसकी भी एक कहानी रही होगी, क्योंकि कहानी है ही ऐसी विधा जिसे जीवन से काटकर नहीं देख सकते, जिसे कभी कहानी के रूप में तो कभी 'कंथ' और कभी 'दंत कथा' के रूप में दादा-दादी, नाना-नानी से सुनी न हो। यह सुनने-सुनाने की परंपरा कोई दस-बीस साल पुरानी नहीं है, बल्कि युगों-युगों से चली आ रही है, जिसे बचपन में हर कोई सुनता है और जीवन के किसी पड़ाव में हर कोई उसे सुनाता है।

'मिश्री मौसी का मटका' पुस्तक पढ़ते समय बार-बार एहसास होता है कि पाठक भी अपनी दादी या नानी से कंथ सुन रहा है। विश्व के हर कोने में बसे समाजों की भाँति कभी कहानी, कभी दंत कथा तो हमारे समाज में 'कंथ' के नाम से मैंने भी सुनी हैं। ये कंथ अत्यंत रोचक, सरस और शिक्षाप्रद होते थे।

'मिश्री मौसी का मटका' पुस्तक में कुल 13 कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ बचपन में सुने कंथों की भाँति वैसी ही रोचक, सारगर्भित और रुचिकर प्रतीत हुईं। इन कहानियों में बालमन को पढ़ने और समझकर उसे समझाने का भरपूर प्रयास किया गया है। सीधे-सीधे कहूँ तो इनमें बाल मनोभावों को उकेरने का भरसक सार्थक प्रयास